नवसंवत्सर का प्रारम्भ

डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा
समन्वयक
वैदिक हैरिटेज एवं पाण्डुलिपि शोध संस्थान, जयपुर

नवसंवत्सर के प्रारम्भ में समस्त पुरुषार्थ-सिद्धि के लिये दुर्गापूजन का क्रम आता है। उसके पश्चात् ही रामनवमी को श्रीरामचन्द्रजी के जन्म का प्रसंग उपस्थित होता है।

भिन्न-भिन्न देशों एवं कालों के वैचित्र्य से भावों एवं कर्मों का भी वैचित्र्य होता है। किन्हीं में हठात् वैराग्य, विवेक एवं शान्ति का, किन्हीं में बलात् काम, क्रोध, मद, मात्सर्य का प्राखर्य होता है। यही स्थिति कालों की भी है। शिशिर, वसन्तादि ऋतुओं में धरणी, अनिल और जल से संयोग होने पर भी धान में अंकुरादि की उत्पत्ति नहीं होती। वर्षा-ऋतुमें वही बीज अङ्कुरित हो उठता है। आम तथा नानाविध तरुलताओं का मुकुलित एवं पुष्पित होना कालविशेष की ही अपेक्षा रखता है। किम्बहुना प्रत्येक पदार्थ की उत्पत्ति, स्थिति एवं विनाशादि में भी काल की अवश्य ही हेतुता है।

आधिदैविक भावनाओं में भी भिन्न-भिन्न तिथियों में भिन्न-भिन्न शक्तियों का प्रादुर्भाव होता है। किन्हीं कालों में आसुरी शक्तियों का और किन्हीं में दैवी शक्तियों का प्राकट्य होता है। एकादशी प्रभृति तिथियाँ वैष्णवी, शिवरात्रि शैवी, नवरात्रों में दुर्गा और रामनवमी को श्रीराम- शक्तियों का प्राकट्य होता है।

पाशविक काम, कर्म, ज्ञानों से प्राणियों की शक्तियों का क्षय होता है। पवित्र तिथियों एवं तीर्थों में तप, त्याग, उपवास, स्नानादि से अशुद्धियों का मार्जन एवं दिव्य शक्तियों का संचय होता है।

पुराणों में ऐसी आख्यायिकाएँ मिलती हैं कि किन्हीं महानुभावों को किन्हीं स्थानों पर जाने के कारण ही असम्भावित दुर्भावनाओं के वश होना पड़ा। जैसे सत्पुरुषों के सत्कर्मों एवं सद्विचारों का तात्कालिक प्रभाव पड़ता है, वैसे ही कालान्तर में भी प्रभाव पड़ता है। जहाँ सात्त्विक सत्पुरुषों के समीप, देवमन्दिर, तीर्थादि स्थलों में सत्सङ्ग,

भगवत्कथा, जप, तप, ध्यान आदि होता रहता है, वहाँ जाने पर मनमें वैसे ही भाव उत्पन्न होने लगते हैं। इसी तरह दुराचार तथा दुर्विचारशील प्रमादी पुरुषों के मन में कुत्सित भावनाएँ उत्पन्न होती हैं। अच्छे और बुरे विचारों एवं कर्मों के समाप्त हो जाने पर भी उनके संस्कार बने रहते हैं। यह बात आजकल के मनोवैज्ञानिकों ने भी स्वीकार कर ली है कि विचारों का प्रभाव पर्याप्तरूप से देश-काल तथा व्यक्तियों पर पड़ता है। इन विचारों, संकल्पों का आदान-प्रदान भी हुआ करता है। असत्पुरुषों, अशास्त्रों तथा असत्कर्मों को भुला देने से असद्विचारों का प्रवाह रुक जाता है और बार-बार स्मरण करने से यह प्रचालित हो उठता है। सद्विचारों, शास्त्रों, पुरुषों एवं कर्मों को बार-बार स्मरण करना उनका स्वागत करना है, उनको भूलना ही उनका बहिष्कार है।

'योगदर्शन' (१। ३७) में वीतराग शुकादिके ध्यान को भी चित्त-निरोध का साधन कहा गया है-

'वीतरागविषयं वा चित्तम् ॥'

वीतराग की आकृति से साधक के मनमें उनके अन्तर्भावों एवं रागादि दोषरहित भगवदाकारित चित्त का स्फुरण होता है। संसार में अनन्त कर्म एवं विचारों के संस्कार फैले होते हैं। बुद्धिमानों का कर्तव्य है कि सद्विचारों के आगमन का द्वार खुला तथा असद्विचारों का बंद रखें। सत्पुरुषों, शास्त्रों एवं सत्कर्मों का स्मरण या सेवन ही उनका द्वार खोलना और विपरीतों का परिवर्जन, विस्मरण ही उनके संस्कारों का द्वार बंद रखना है। सात्त्विक भावों के स्मरण या सेवन से उनके संकल्प की धारा चल पड़ती है, विपरीत से विपरीतों की। पाशविक कर्मों के दर्शन या चिन्तन से ही कामादि विकृतियों को स्थान मिल जाता है। इस तरह जिन देशों में उच्चकोटि के सत्पुरुषों का निवास, सद्विचारों एवं सत्कर्मों का विस्तार हुआ, वहाँ के परमाणु-जलवायु सब-के-सब उसी भावना से भावित हो जाते हैं।

यही स्थिति कालों की भी होती है। स्वर-साधना- वालों को तत्त्वों के भेद से काल में स्पष्ट भेद भासित होते हैं।

किसी तत्त्व के संचार से बलात् मन में चाञ्चल्य की सृष्टि होती है और किसी तत्त्व के संचार से शान्ति, एकाग्रता आदि की प्राप्ति होती है। इसलिये भजन, ध्यान आदि के लिये आकाश या जलतत्त्व तथा सुषुम्णा का संचार अनुकूल समझा जाता है। इसी कारण भिन्न-भिन्न मासों और तिथियों का माहात्म्य पुराणादि शास्त्रों में मिलता है। श्रुतार्थापत्ति प्रमाण द्वारा यह स्पष्ट होता है कि शिवरात्रि, रामनवमी आदि दिव्य तिथियों में विशेषरूप से शिव, विष्णु आदि शक्तियों का प्राकट्य होता है। भजन, ध्यान, उपवास आदि द्वारा शक्तियों का ही संग्रह किया जाता है। अन्नपानादि द्वारा जब तक पुरुष की शक्ति क्षीण रहती है, तब तक बाह्य शक्तियों का आकर्षण नहीं होता।

किसी कालविशेष में किसी शक्तिविशेष का प्राकट्य होता है। जैसे अमावास्या को पितर-प्राणों की व्याप्ति होती है, वैसे ही एकादशी, शिवरात्रि, रामनवमी आदि में भी भिन्न- भिन्न शक्तियों का संचय किया जा सकता है। व्रतों और त्योहारों का यह भी एक रहस्य है।

चैत्र शुक्लपक्ष बड़े महत्त्व का है। इसमें नौ दिनों तक आद्याशक्ति भगवती का व्रत और श्रीदुर्गासप्तशती का पाठ करने से आध्यात्मिक, आधिभौतिक दोषों पर विजय प्राप्त करने में बड़ी सहायता मिलती है। निखिल ब्रह्माण्डाधीश्वरी माँ का पूजन होते ही विश्वपति भगवान् श्रीराम की जन्मोत्सव- नवमी आ जाती है। सदा ही रामनवमी को श्रीरामचन्द्रजी का दिव्य भर्ग भूमण्डल में अवतीर्ण होकर विघ्नों एवं दानवी शक्तियों का मर्दन करके सत्पुरुषों का संरक्षण करता है। रामनवमी का व्रत और रामजन्मोत्सव, भगवान् का पूजन प्राणियों में सचमुच दिव्य शक्ति प्रदान करता है।

संवत्सर प्रतिपदा (नवसंवत्सर)

चैत्रमास के शुक्लपक्ष को प्रतिपदा तिथि से नवसंवत्सर का आरम्भ होता है, यह अत्यन्त पवित्र तिथि है। इसी तिथि से पितामह ब्रह्मा ने सृष्टिनिर्माण प्रारम्भ किया था-

'चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि।
शुक्लपक्षे समग्रे तु तदा सूर्योदये सति ॥'

इस तिथि को रेवती नक्षत्र में, विष्कुम्भ योग में दिन के समय भगवान् के आदि अवतार मत्स्यरूप का प्रादुर्भाव भी माना जाता है-

कृते च प्रभवे चैत्रे प्रतिपच्छुक्लपक्षगा।
रेवत्यां योगविष्कुम्भे दिवा द्वादशनाडिकाः ॥
मत्स्यरूपकुमार्यां च अवतीर्णो हरिः स्वयम् ॥

(स्मृतिकौस्तुभ)

युगों में प्रथम सत्ययुग का प्रारम्भ भी इस तिथि को हुआ था। यह तिथि ऐतिहासिक महत्त्व की भी है, इसी दिन सम्राट् चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने शकों पर विजय प्राप्त की थी और उसे चिरस्थायी बनाने के लिये विक्रम संवत् का प्रारम्भ किया था।

संवत्सर-पूजन-

इस दिन प्रातः नित्यकर्म करके तेल का उबटन लगाकर स्नान आदि से शुद्ध एवं पवित्र होकर हाथ में गन्ध, अक्षत, पुष्प और जल लेकर देश-काल के उच्चारण के साथ निम्नलिखित संकल्प करना चाहिये-

'मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य स्वजनपरिजनसहितस्य

वा आयुरारोग्यैश्वर्यादिसकलशुभफलोत्तरोत्तराभिवृद्धयर्थं ब्रह्मादिसंवत्सरदेवतानां पूजनमहं करिष्ये।'

ऐसा संकल्प कर नयी बनी हुई चौरस चौकी या बालू की वेदी पर स्वच्छ श्वेतवस्त्र बिछाकर उस पर हल्दी या केसर से रँगे अक्षत से अष्टदलकमल बनाकर उस पर ब्रह्माजी की सुवर्णमूर्ति स्थापित करे। गणेशाम्बिका-पूजन के पश्चात् **'ॐ ब्रह्मणे नमः'** मन्त्र से ब्रह्माजी का आवाहनादि षोडशोपचार पूजन करे।

पूजन के अनन्तर विघ्नों के नाश और वर्ष के कल्याणकारक तथा शुभ होने के लिये ब्रह्माजी से निम्न प्रार्थना की जाती है-

भगवंस्त्वत्प्रसादेन वर्षं क्षेममिहास्तु मे।
संवत्सरोपसर्गा में विलयं यान्त्वशेषतः ।।

पूजन के पश्चात् विविध प्रकार के उत्तम और सात्त्विक पदार्थों से ब्राह्मणों को भोजन कराने के बाद ही स्वयं भोजन करना चाहिये।

इस दिन पञ्चाङ्ग-श्रवण किया जाता है। नवीन पञ्चाङ्ग से उस वर्ष के राजा, मन्त्री, सेनाध्यक्ष आदि का तथा वर्ष का फल श्रवण करना चाहिये। सामर्थ्यानुसार पञ्चाङ्ग-दान करना चाहिये तथा प्याऊ (पौसला) की स्थापना करनी चाहिये।

आज के दिन नया वस्त्र धारण करना चाहिये तथा घर को ध्वज, पताका, बन्दनवार आदि से सजाना चाहिये। आज के दिन निम्ब के कोमल पत्तों, पुष्पों का चूर्ण बनाकर उसमें काली मिर्च, नमक, हींग, जीरा, मिस्री और अजवाइन डालकर खाना चाहिये, इससे रुधिर-विकार नहीं होता और आरोग्य की प्राप्ति होती है। इस दिन नवरात्र के लिये घट-स्थापन और तिलकव्रत भी किया जाता है। इस व्रत में यथासम्भव नदी, सरोवर अथवा घर पर स्नान करके संवत्सर की मूर्ति बनाकर उसका **'चैत्राय नमः', 'वसन्ताय नमः'** आदि नाम-मन्त्रों से पूजन करना चाहिये। इसके बाद विद्वान् ब्राह्मण का पूजन-अर्चन करना चाहिये।